ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को 73वें स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 42, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 अगस्त, 2019 से रविवार 11 अगस्त, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

एक देश - एक विधान - एक निशान का सपना हुआ साकार

आजादी के 72 वर्ष बाद सम्भव हुआ - धारा 370 का भूल सुधार

आर्य समाज की ओर से प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं सभी देशवासियों को बहुत-बहुत बधाई

जम्मू कश्मीर का अब अलग तरीके से होगा विकास
- महाशय धर्मपाल

देशवासियों एवं राष्ट्रनायकों को आर्यसमाज की ओर से बधाई
- सुरेशचन्द्र आर्य

धारा 370 को हटाने के लिए सरकार को बधाई
- प्रकाश आर्य

देश की एकता और अखण्डता के लिए सरकार का ऐतिहासिक कदम
- धर्मपाल आर्य

पुण्यमय भारत देश के 73वें स्वाधीनता दिवस से 10 दिन पूर्व 5 अगस्त 2019 का दिन राष्ट्र के स्वर्णिम ऐतिहासिक बसंती पन्नों में अंकित हो गया। भारत के अभिन्न अंग जम्मू कश्मीर से धारा 370 को समाप्त कर देश के नेतृत्व ने यह सिद्ध कर दिया कि अगर मन में देश के प्रति सच्चा प्रेम हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री श्री अमित शाह की संकल्प शक्ति, दृढ़ इच्छा शक्ति और अदम्य साहस की प्रशंसा करते हुए आर्यसमाज के शीर्ष नेतृत्व ने प्रैस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि आज भारत का मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया है। इस अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक सफलता के लिए सार्वदेशिक आर्य

प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं सहित समूचे आर्य समाज परिवार की ओर से सभी देशवासियों, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं संसद के दोनों सदनों को बहुत-बहुत बधाई दी।

पिछले सात दशकों में कई सरकारें आईं और समय के साथ चली भी गईं। लेकिन कश्मीर की समस्या जस की तस बनी रही। वर्तमान सरकार ने अपने संकल्प को पूरा करते हुए कश्मीर में एक

- शेष पृष्ठ 8 पर

पूर्व विदेश मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज के आकस्मिक निधन से देश में शोक की लहर

आर्यसमाज की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि

भारतीय संस्कृति, संस्कृत और संस्कारों की संपोषक, नारी जगत की प्रेरणा स्रोत, पूर्व विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के आकस्मिक निधन से समूचे देश में शोक की लहर है। सरल, सहज, वाकपटुता की धनी, तार्किक, विनम्र, सौम्य स्वभाव, लोकप्रिय, विदुषी और भाजपा की कद्दावर नेत्री का इस तरह अचानक चले जाना देश के लिए बहुत बड़ी क्षति है। देश की ऐसी महान हस्ती के निधन से आर्यसमाज और पूरे देश को गहरा आघात लगा है। श्रीमती सुषमा स्वराज जी का कारूणिक एवं लोकोपकारी मधुर स्वभाव और संयमित तथा संतुलित व्यवहार अपने आप में एक अनुपम आदर्श था। महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के प्रति उनकी श्रद्धा स्तुत्य है। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण सस्थाओं की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली तथा आर्य समाज परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि इस महान दिवंगत पुण्य आत्मा को शांति-सद्गति प्रदान करे और सुषमा जी के परिवार को इस असहनीय पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करे।

स्व. सुषमा स्वराज जी को श्रद्धांजलि देते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनधि सभा उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

दिनांक
11, 12, 13 अक्तूबर, 2019
(शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

सम्मेलन स्थल
सीर गोवर्धन, वाराणसी, निकट- संत रविदास जन्म स्थली एवं बी.एच.यू.,राष्ट्रीय राजमार्ग सं. - 2, वाराणसी (उ.प्र.)

सभी आर्यजन स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन में सादर आमन्त्रित हैं। समस्त पाठकों, आर्यसमाज के अधिकारियों व सदस्यों से अपील है कि महासम्मेलन की सूचना अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति तक अवश्य पहुंचाएं।

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ★ जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी ★ महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास ★ सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ.प्र.

महासम्मेलन में भाग लेने वालों के लिए यात्रा सम्बन्धी सूचना पृष्ठ 8 पर

वेद-स्वाध्याय

आत्म जागृति

इयं कल्याण्य जरा मर्त्यस्यामृता गृहे।
यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः।।अथर्व0 10/8/26
ऋषिः **कुत्सः।।** देवता - **आत्मा।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **इयम्** = यह **कल्याणी** = कल्याणस्वरूपिणी देवता **अजरा** = कभी जीर्ण न होनेवाली, कभी बुड्ढी न होनेवाली है। यह **मर्त्यस्य** = मरणशील मनुष्य के **गृहे** = घर में, शरीर में धारण की गई **अमृता** = अमृत है, न मरनेवाली है, किन्तु **यस्मै** = जिसके लिए **कृता** = यह धारण की गई है **सः** = वह **शये** = सोया पड़ा है, इसे **यः** = जिसने **चकार** = धारण किया है **सः** = वह भी **जजार** = जीर्ण हो जाता है।

विनय - देखो, यह कल्याण स्वरूपिणी देवता है जो कभी बुड्ढी नहीं होती, सदा अजरा है। यह मरणशील मनुष्य के, मर्त्य के, घर में धारण की गई अमृत है, कभी न मरनेवाली है। यह इस घर में न जाने कब से बैठी है, पर बड़े दुःख की बात है कि यह जिसके लिए आई है, जिसके लिए घर में धारण की गई है वह सोया पड़ा है, वह लगातार सोया पड़ा है। उसे धारण करनेवाला यह घर जीर्ण हो जाता है और ढह जाता है, फिर भी उसकी नींद नहीं समाप्त होती।

क्या तुम समझे कि यह कल्याणी देवता किसके लिए आई हुई है? शरीररूपी मर्त्यगृह में धारण की गई यह आत्मदेवता किस काम के लिए बैठी हुई है? यह तो जीव का कल्याण करने के लिए आई हुई है। यह माता तो अपने जीव-पुत्र को उसके कल्याणमय मंगलधाम में ले-जाने के लिए आई हुई है और न जाने कब से पुत्र के जगने की प्रतीक्षा में बैठी हुई है। उसे धारण करनेवाले एक नहीं बहुत-से घर जीर्ण हो चुके हैं, बहुत-से शरीर बुड्ढे हो चुके हैं, पर वह प्रतीक्षा में बैठी हुई है। यह अजरा अमृता माता तो अनन्त काल तक ऐसे ही निर्विकार बैठी रह सकती है और जबतक जीव न जागेगा तबतक बैठी रहेगी। पर हाँ! चिन्ता की बात तो यह है कि जीव कब जागेगा? यह पुत्र कब जागेगा? कब जागृति पाएगा?

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आखिरकार धारा 370 से मिली कश्मीर को आजादी

.....5 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक में इसका फैसला हुआ। गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में संकल्प पत्र प्रस्तुत किया। इसके बाद जम्मू-कश्मीर को दो हिस्सों में बांटने वाला विधेयक जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन बिल दोनों सदनों में पारित करवा कर मोदी सरकार ने इतिहास रच दिया है। यानि जम्मू-कश्मीर अब राज्य नहीं रहेगा। जम्मू-कश्मीर की जगह अब दो केंद्र शासित प्रदेश होंगे। एक का नाम होगा जम्मू-कश्मीर, दूसरे का नाम होगा लद्दाख। दोनों केंद्र शासित प्रदेशों का शासन उपराज्यपाल के हाथ में होगा। जम्मू-कश्मीर की विधायिका होगी जबकि लद्दाख में कोई विधायिका नहीं होगी। .....

देश की आजादी के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु सरकार की सबसे बड़ी गलतियों में एक गिनी जाने वाली गलती धारा 370 थी। अगर इसके इतिहास में जाएं तो साल 1947 में भारत-पाकिस्तान के विभाजन के समय जम्मू-कश्मीर के राजा हरिसिंह स्वतंत्र रहना चाहते थे, लेकिन बाद में उन्होंने कुछ शर्तों के साथ भारत में विलय के लिए सहमति जताई। इसके बाद भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 का प्रावधान किया गया, जिसके तहत जम्मू-कश्मीर को विशेष अधिकार दिए गए थे। अनुच्छेद 370 के प्रावधानों के अनुसार, रक्षा, विदेश नीति और संचार मामलों को छोड़कर किसी अन्य मामले से जुड़ा कानून बनाने और लागू करवाने के लिए केंद्र को राज्य सरकार की अनुमति चाहिए थी।

किन्तु अब 5 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक में इसका फैसला हुआ। गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में संकल्प पत्र प्रस्तुत किया। इसके बाद जम्मू-कश्मीर को दो हिस्सों में बांटने वाला विधेयक जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन बिल दोनों सदनों में पारित करवा कर मोदी सरकार ने इतिहास रच दिया। यानि जम्मू-कश्मीर अब राज्य नहीं रहेगा। जम्मू-कश्मीर की जगह अब दो केंद्र शासित प्रदेश होंगे। एक का नाम होगा जम्मू कश्मीर, दूसरे का नाम होगा लद्दाख। दोनों केंद्र शासित प्रदेशों का शासन उपराज्यपाल के हाथ में होगा। जम्मू-कश्मीर की विधायिका होगी जबकि लद्दाख में कोई विधायिका नहीं होगी। कश्मीर के अलग झंडे के बजाय अब वहां तिरंगा ही देश का झंडा माना जायेगा और जम्मू-कश्मीर की विधानसभा का कार्यकाल जो 6 वर्षों का होता था वह भी अब भी पांच वर्ष का ही होगा।

यह एक बहुत बड़ा बदलाव है। सरकार के इस कड़े फैसले की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। क्योंकि कई दशकों से कश्मीरी हिन्दू कश्मीर में भारतीय संविधान की बाट जोह रहे थे। या ये कहें कि लम्बे कालखंड से विस्थापित हिन्दू कश्मीर में भारतीय संविधान और केंद्र शासित क्षेत्र का दर्जा मांग रहे थे। सरकार ने जो किया इसके पीछे एक नहीं बल्कि अनेक कारण ऐसे थे जो धीरे-धीरे कश्मीर को भारत से अलग कर रहे थे। दिसम्बर 2016 को श्रीनगर हाइकोर्ट ने तिरंगे की जगह कश्मीर राज्य का झंडा वहां के संवैधानिक पदों पर लगाये जाने का आदेश दिया था। उस समय भी हमने आर्य सन्देश के माध्यम से कश्मीर में केंद्र द्वारा शासन की मांग उठाई थी। यह मांग उठाने के पीछे तथ्य ये दिए थे कि 1990 में एम.बी.बी.एस. दाखिलों में जम्मू का 60 प्रतिशत कोटा था जो 1995 से 2010 के बीच घटाकर सिर्फ 17 से 21 प्रतिशत कर दिया गया था, यही नहीं धारा 370 और 35ए के चलते जम्मू कश्मीर की ओबीसी जातियों को आरक्षण का लाभ भी नहीं मिलता है। यानि मुख्यमंत्री हमेशा घाटी क्षेत्र से चुनकर आते रहे और जम्मू और लद्दाख के साथ भेदभाव करते रहे।

समय के साथ सरकारें बदलती रहीं पर किसी सरकार ने इसे हटाने की हिम्मत नहीं की। इस कारण जम्मू कश्मीर में कभी भी लोकतंत्र प्रफुल्लित नहीं हुआ। धारा 370 के कारण भ्रष्टाचार फला-फूला, पनपा और चरम सीमा पर पहुंचा। भारत सरकार ने हजारों करोड़ रुपये जम्मू और कश्मीर के लिए भेजे, लेकिन वे भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गए, धारा 370 को हथियार बनाकर वहां भ्रष्टाचार को कंट्रोल करने वाले कानून भी कभी लागू नहीं होने दिए गए।

धारा 370 के कारण लम्बे अरसे से लद्दाख क्षेत्र विकास के लिए तरस रहा था। 29 हजार वर्ग किमी० में फैला लद्दाख क्षेत्र प्रकृति की अनमोल धरोहर है, जहाँ दुनिया के कोलाहल से दूर शांति का अनुभव किया जा सकता है। प्रकृति की यही सौम्यता हमेशा देश विदेश के सैलानियों को अपनी तरफ आकर्षित करती है। अब यहाँ के निवासियों के लिए रोजगार के अनेकों अवसर भी खुल सकते हैं। जबकि इससे पहले प्रशासनिक स्तर पर भी लद्दाख क्षेत्र से अभी तक (आई.ए.एस.) के लिए कुल चार से छः लोग ही चुने गये है। अगर साल 1997-98 का ही उदाहरण देखें तो कश्मीर राज्य में लोक सेवा आयोग में परीक्षा आयोजित की गयी थी। इस परीक्षा में 1 इसाई, 3 मुस्लिम तथा 23 बौद्ध मत को मानने वालों ने लिखित परीक्षा पास की थी। किन्तु मजहबी मानसिकता देखिये इनमें मात्र 1 इसाई और 3 मुस्लिम सेवार्थियों को नियुक्ति दे दी गयी, जबकि 23 बौद्ध धर्म के आवेदकों में से सिर्फ 1 को नियुक्ति दी गयी। इस एक उदाहरण से वहां तत्कालीन सरकारों द्वारा धार्मिक भेदभाव का अनुमान लगाया जा सकता है। अन्याय की चरम स्थिति तब भी देखने को मिलती है जब बौद्ध और हिन्दुओं को पार्थिव देह के अंतिम संस्कार के लिए भी मुस्लिम बहुल इलाकों में अनुमति नहीं मिलती। शव को हिन्दू या बौद्ध बहुल इलाकों में ले जाना पड़ता है। आज महबूबा मुफ्ती से लेकर फारुख परिवार और गुलाम नबी आजाद इस बिल को कश्मीर से धोखा और संविधान की हत्या बता रहे हैं। कश्मीरी संस्कृति और इस्लाम का राग अलापा जा रहा है। जबकि कश्मीर का मतलब सिर्फ मुसलमान नहीं है। आज जम्मू क्षेत्र की 60 लाख जनसँख्या में करीब 42 लाख हिन्दू हैं, इनमे तकरीबन 15 लाख विस्थापित हिन्दू हैं जो धारा 370 के चलते गुलामों जैसा जीवन जीवन जीने को मजबूर हैं। हमने कभी कश्मीरी नेताओं की जुबान से से घाटी के पंडितों का दर्द नहीं सुना जो अपना बसा बसाया घर छोड़कर आज दर-दर की ठोकर खाने को मजबूर हैं, जबकि इसके उलट घाटी में सेना पर पत्थर बरसाने वालों की पैरोकारी संसद में हर रोज सुनाई दी।

आज जम्मू कश्मीर में एक लंबे रक्तपात भरे युग का अंत धारा 370 हटने के बाद हो गया है। सरकार ने अब हिम्मत दिखाकर और जम्मू कश्मीर के लोगों के हित के लिए यह फैसला लिया है। कश्मीर को भारत से जोड़ दिया और अब वहां भारतीय संविधान भी लागू हो जायेगा। इस निर्णय से यह सुनिश्चित होगा कि जम्मू-कश्मीर में दो निशान-दो संविधान अब नहीं होंगे। यह निर्णय उन सभी देशभक्तों और भारत माता के उन सभी वीर सैनिकों के लिए एक श्रद्धांजलि है जिन्होंने एक अखंड भारत के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। आर्य समाज की ओर से सरकार को शुभकामनायें और पूरे देश को बधाई।

- सम्पादक

जेब के साथ जीभ भी काट रहा अन्धविश्वास

घर के दरवाजे पर नीबू, मिर्च टांगना, बाहर निकलते समय घर के लोगों को दही, चीनी खाने को कहना, अगर कोई छींक दे, तो अशुभ मान कर रुक जाना, बिल्ली सामने से गुजर जाए, तो वहीं रुक जाना आदि यकीन मानिये ये अंधविश्वास अब पुराने पड़ चुके हैं। अब पिछले कई दिनों से छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले के करतला-सेन्द्रीपाली में लक्ष्मी प्रसाद के घर पूजा का सामान लेकर लोगों की भारी भीड़ जुट रही है। लोग लक्ष्मी प्रसाद के प्रति इस कदर आस्थावान हो गये कि उसके लिए एक तंबू भी लगा दिया है। अंधविश्वासी अनपढ़ भक्त लक्ष्मी प्रसाद ने भगवान शिव को रिझाने के लिए अपनी जीभ काटकर भगवान शिव को अर्पण कर दी और जैसा कि हमारे देश में होता है, भक्त की इस अराधना की खबर लगते ही श्रद्धालुओं का वहां पर तांता लग गया है। लोग उसके पास आशीर्वाद पाने के लिए नारियल, फूल और अगरबत्ती लेकर पहुंच रहे हैं। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि उसने अपनी जीभ काटकर शिवलिंग पर चढ़ा दी है और ग्रामीण इसे चमत्कार मानने लगे हैं। लेकिन आप इसे अंधविश्वास की पराकाष्ठा कह सकते हैं।

देखा जाये देश में हर महीने कोई न कोई धार्मिक त्यौहार या उत्सव मनाया जाता है किन्तु सावन का महीना एक ऐसा महीना है जिसमें शिव मंदिर में भक्तों की लम्बी कतार लगी दिखाई देती है। लेकिन इस भक्ति पर जब हमें धक्का लगता है जब इस भक्ति की आड़ में अंधविश्वास को फैलाया जाता है। इसे भक्ति की पराकाष्ठा या पागलपन की हद ही कह सकते हैं जब एक जीभ काटने वाले मानसिक रूप से विकृत इन्सान को भी भगवान का दर्जा दिया जाने लगे। शायद यही कारण है जो आज भी हमारे देश की पहचान दुनिया में एक शिक्षित प्रगतिशील देश के बजाय पिछड़े हुए देशों की श्रेणी में की जाती है। छोटी-छोटी बातों पर टोना-टोटका करना तो यहां आम बात है ही लेकिन अब तो लोग शिव की आराधना में अपनी जीभ मंदिरों में चढ़ा रहे हैं।

यह कोई इकलौती घटना नहीं है अगर पिछले कुछ सालों में देखा जाये तो जीभ काटने के अनगिनत मामले प्रकाश में आये। जिन पर यह कहा गया कि यह आस्था से जुड़ा मामला है इसे विज्ञान और कानून में नही लाया जा सकता। इस कारण भी मामले बढ़ते जा रहे हैं। पिछले वर्ष उड़ीसा के राउरकेला में शिव को प्रसन्न करने के लिए छत्तीसगढ़ के एक अठारह वर्षीय युवक अश्विनी पटेल ने अपनी जीभ काट कर चढ़ा दी थी। इससे कुछ दिन पहले हैदराबाद के एक मंदिर में आंध्र प्रदेश के युवक ने अपनी जीभ काटकर भगवान वेंकटेश्वर को चढ़ा दी थी। वह चाहता है कि उसके चहेते दो बड़े नेता ही आंध्र और तेलंगाना के मुख्यमंत्री बनें।

इससे पहले वर्ष 2016 में छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के अंधविश्वास के कारण 11 वर्षीय एक आदिवासी बालिका चमेली सिदार ने अपनी जीभ काटकर शिव लिंग पर चढ़ा दी थी। यहीं पिछले कुछ समय पहले मध्यप्रदेश के नीमच जिले में तो आंतरी माता मंदिर में 6 भक्तों ने अपनी जीभ काट कर चढ़ा दी थी। यहां मनोवांछित फल की प्राप्ति होने पर जबान काटकर माता के चरणों में चढ़ाने की परंपरा है। चौकाने वाली बात यह है कि अभी तक प्रशासन और सरकार द्वारा कोई कदम नहीं उठाया गया जबकि यहाँ सैकड़ों लोग अपनी जीभ काटकर चढ़ा चुके हैं।

.....यह सब देखकर आश्चर्य होता है कि हमारे देश में आज भी कैसा अंध विश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है। ऐसे अंधविश्वास को तब और बढ़ावा मिलता है जब मंत्री और आईएएस, आईपीएस अंधविश्वास की शरण में दिखाई देते हैं। यानि पढ़ा-लिखा सुशिक्षित तबका जो देश में गरीबी दर भी जानता है और समाज में फैले अंधविश्वास को भी, अपना पैसा समाज की शिक्षा और जागरूकता पर खर्च करने के बजाय इन अंधविश्वास और कथित धर्मगुरुओं पर लुटा रहा है.....

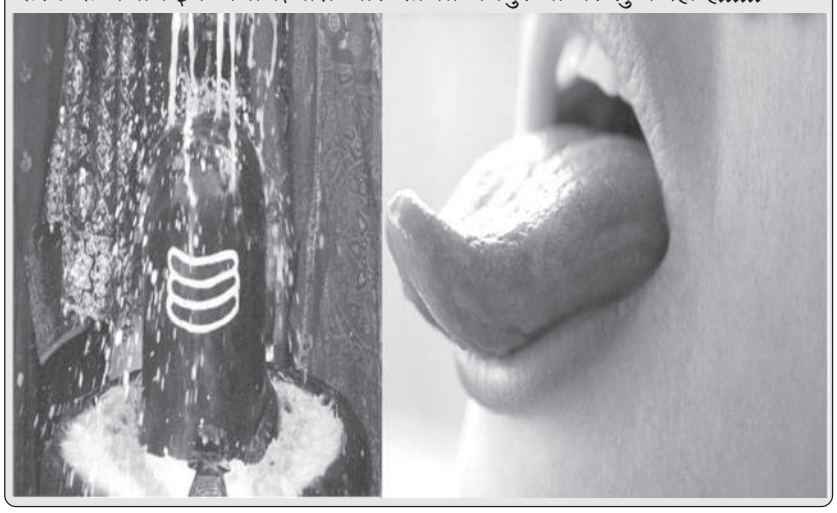

यह सब देखकर आश्चर्य होता है कि हमारे देश में आज भी कैसा अंध विश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है। ऐसे अंधविश्वास को तब और बढ़ावा मिलता है जब मंत्री और आईएएस, आईपीएस अंधविश्वास की शरण में दिखाई देते हैं। यानि पढ़ा-लिखा सुशिक्षित तबका जो देश में गरीबी दर भी जानता है और समाज में फैले अंधविश्वास को भी, अपना पैसा समाज की शिक्षा और जागरूकता पर खर्च करने के बजाय इन अंधविश्वास और कथित धर्मगुरुओं पर लुटा रहा है।

इसी का नतीजा है हर रोज नये-नये कथित धार्मिक टैलीविजन चैनल खुल रहे हैं। इन चैनलों पर नाग-नागिन और भूत-प्रेत की कहानियों को परोसा जा रहा है। इसके अलावा मीडिया ने अंधविश्वास बाजार को बड़ा रूप देने का एक किस्म से ठेका ले लिया है। हर रोज सुबह राशिफल और ज्योतिष शास्त्र से शुरू हुए टीवी कार्यक्रम रात तक धारावाहिकों में आत्मा, जादू-टोने में बदल जाते हैं ताकि लोगों में डर पैदा किया जा सके और धर्म सम्बन्धी वस्तुओं के बाजार में स्थापित किया जा सके। मीडिया अंधविश्वास को फैलाने में इस समय अहम भूमिका निभा रहा है। वह भय के मनोविज्ञान को भुना रहा है।

इसके दो नतीजे समाज में देखने को मिल रहे हैं इनमें जहाँ एक ओर मध्यम वर्ग की तो जेब कट रही दूसरी और निम्न वर्ग जिसके पास पैसा नहीं वह अपनी जीभ काट रहा है। धर्म पर धंधा हावी है। वैज्ञानिक सोच को तबाह कर इस धारणा को मजबूत किया जा रहा है कि अंध विश्वास के बिना तो दुनिया चल ही नहीं सकती। इससे मीडिया और बाबाओं दोनों का बाजार फलता-फूलता है। 2017 में जब चोटी कटने वाली अफवाह को मीडिया ने जमकर विज्ञापन और खबरों के माध्यम से खूब बेचा तो वही पाखण्ड से जुड़े लोगों ने तन्त्र-मन्त्र से खूब धन बटोरा। जब लोगों ने रूचि लेनी बंद की। इसके बाद उस काल्पनिक हज्जाम का आज तक कोई सुराग नहीं लग पाया। साफ कहा जाये तो आज देश में आधुनिकता और अंधविश्वास कदम-ताल करते हुए चल रहे हैं। इस कारण हमें खुद ही पता नहीं चल पा रहा है कि हम आधुनिक हो रहे हैं या अंधविश्वासी। एक बड़े विरोधाभास के बीच से भारतीय समाज गुजर रहा है। क्योंकि इसमें ईश्वर के नाम पर अंध विश्वास के प्रति आस्था खड़ी की जा रही है और जब तर्क और सच्चाई के ऊपर अंधविश्वास हावी हो जाता है तो जेब और जीभ का कटना शुरू हो ही जाता है। - ***राजीव चौधरी***

प्रेरक प्रसंग

मैं कैसे कहूं कि न पहनो

हिन्दी सत्याग्रह के बाद सन् 1958 ई. में एक बार हम यमुनानगर गये। तब स्वामी श्री आत्मानन्दजी अस्वस्थ चल रहे थे। उन्हें शरीर रक्षा के लिए रुई की जैकट बनवाकर दी गई।

किसी आर्यपुरुष ने उनके आश्रम में सब ब्रह्मचारियों के लिए रूई की जैकेट बनवाकर भेज दी। गुरुकुलों के ब्रह्मचारी प्राय: सर्दी-गर्मी के अभ्यासी होते हैं, अत: कोई जैकट न पहनता था। एक बार रिवाज पड़ जावे तो फिर प्रतिवर्ष सबके लिए सिलानी पड़ें। एक ब्रह्मचारी (श्री आचार्य भद्रसेन जी होशियारपुर वाले) ने स्वामीजी से कहा, ''अमुक सज्जन ने जैकट भेजी हैं। आप उन्हें कह दें कि ये नहीं चाहिएँ। आप कह दें कि-ब्रह्मचारियों को इसकी क्या आवश्यकता है?''

पूज्य स्वामीजी तब अपनी कुटिया में जैकट पहने ही बैठे थे। आपने कहा, ''मैं कैसे कह दूँ कि न पहनो। मैंने तो अब स्वयं जैकट पहन रखी है।''

लेखक इस घटना का प्रत्यक्षदर्शी है। बड़े व्यक्ति में यही तो अन्तर है। बड़ों की पहचान इसी से होती है। आर्यसमाज के बड़ों ने अपनी कथनी व करनी को जोड़ा। ऋषि ने तो प्रार्थना से पूर्व भी पुरुषार्थ का होना आवश्यक बताया है। आइए! हम भी कुछ सीखें। - ***प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (वेद)

आर्यन अभिनन्दन समारोह-2019

1. वैदिक वाङ्मय पर विशिष्ट कार्य कर चुके विद्वान एवं विदुषियां
2. राष्ट्रपति अथवा किसी सरकार द्वारा सम्मानित आर्य विद्वान एवं विदुषियां
3. आर्य वीरदल एवं वीरांगना दल को शिक्षित करने वाले शिक्षक-शिक्षिकाएं

पूर्ण विवरण सहित भेजें

सितम्बर मास में दिल्ली में सम्मान समारोह सम्पन्न होगा। अपना पूर्ण परिचय निम्न पते पर शीघ्रतिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट

ए-41, द्वितीय फ्लोर, लाजपत नगर-द्वितीय, (निकट- मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली- 110024

फोन : 011-29842527, 011-45791152 9599107207

Email : rashtranirmanparty@gmail.com

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

तनाव के कारण और निवारण

..... सब कुछ मनुष्य के मनचाहा कभी नहीं होता। अनेक बार अनचाहा और विपरीत वातावरण में मनुष्य को एडजेस्ट करना आना ही चाहिए। प्राय: जब हम ऐसी चीज़ों के प्रति डर जाते हैं जिनपर हमारा नियंत्रण नहीं होता या हम उन परिस्थितियों को बदलने में असमर्थ होते हैं, तो प्राय: भावनात्मक तनाव उत्पन्न होता है। फिर कुछ लोग भाग-दौड़, तनावग्रस्त जीवन पद्धति के आदि हो जाते हैं, जो दबाव में जीने की वजह से पैदा होता है। .....

गतांक से आगे -

तनाव : एक ताकतवर समस्या

आधुनिक परिवेश में तनाव एक ताकतवर समस्या बनकर मानव समाज में लगातार फैल रहा है। हालांकि एक सीमा तक जीवन विकास के लिए तनाव आवश्यक भी है लेकिन अधिक मात्रा में तनाव उत्पन्न हो जाए तो यह एक भयंकर बीमारी का रूप ले लेता है और इससे अनेक जानलेवा बीमारियों का जन्म हो जाता है। मनोचिकित्सकों का मानना है कि लगातार तनावपूर्ण जीवन जीने वाले लोगों को ब्लड़ प्रेशर, मधुमेह, हार्ट और अनेक अन्य असाधारण बीमारियां घेर लेती हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा सोचता है, करता है वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। तनाव के कारण मनुष्य की सोच ही नकारात्मक हो जाती है। अगर कोई व्यक्ति उसके लिए अच्छा भी सोचता है, करता है तो उसे उस पर सरलता से विश्वास नहीं होता और तनाव से भरा हुआ व्यक्ति अपने शुभचिंतक से भी भयभीत होने लगता है। जो व्यक्ति उसकी प्रशंसा करे, उसके लिए अच्छा बोले, उसके नकारात्मक स्वभाव को बदलने का प्रयास करे तो भी तनाव से भरे हुए व्यक्ति को यही लगता है कि यह मेरे खिलाफ साजिश कर रहा है, इसमें जरूर इसकी कोई चलाकी है। दिखाने के लिए ये मेरे लिए कुछ अच्छा करना चाहता है लेकिन अंदर से तो मेरा बुरा चाहता है। क्योंकि तनाव के समय शरीर में जो रासायनिक स्राव या भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है, उससे शरीर और मन में बचैनी उत्पन्न होने लगती है। तनाव का सबसे ज्यादा प्रभाव मनुष्य के दिमाग पर पड़ता है। उसकी सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगती है। आदमी अपने और पराए को समझने में गलती करने लगता है। उसे अच्छी बात भी बुरी लगती है और बुरी बात अच्छी और फायदे वाली लगने लगती है।

तनाव के प्रकार

तनाव के कई प्रकारों में शारीरिक तनाव की एक अवस्था यह भी है कि जब किसी मनुष्य के मन में इस बात का भय हो कि कोई व्यक्ति या कोई चीज़ उसे शारीरिक रूप से चोट पहुंचा सकती है, तब उसका शरीर स्वाभाविक रूप से किए गए एक्शन पर पूरा रिएक्शन करता है ताकि वह उस खतरनाक परिस्थिति से उबर कर जीने में सक्षम हो जाए या पूरी तरह से उससे पलायन ही कर जाए। यह जीवन रक्षक रूप का तनाव है।

भावनात्मक तनाव

सब कुछ मनुष्य के मनचाहा कभी नहीं होता। अनेक बार अनचाहा और विपरीत वातावरण में मनुष्य को एडजेस्ट करना आना ही चाहिए। प्राय: जब हम ऐसी चीज़ों के प्रति डर जाते हैं जिनपर हमारा नियंत्रण नहीं होता या हम उन परिस्थितियों को बदलने में असमर्थ होते हैं, तो प्राय: भावनात्मक तनाव उत्पन्न होता है। फिर कुछ लोग भाग-दौड़, तनावग्रस्त जीवन पद्धति के आदि हो जाते हैं, जो दबाव में जीने की वजह से पैदा होता है। लेकिन तनाव में जीने की जिन्हें एक बार आदत पड़ जाती है फिर अगर उनके जीवन में तनाव नहीं भी होता तो वे लोग स्वयं तनाव पैदा कर लेते हैं। उन्हें फिर तनाव मुक्त जीवन अच्छा नहीं लगता। ऐसे लोगों को हंसते, खेलते हुए बच्चे भी बुरे लगने लगते हैं। अगर कोई हंसने-हंसाने की बात भी उनके सामने की जाए तो भी उन्हें हंसी नहीं आती। लेकिन कभी अधिक प्रयास करने तनाव में जीने वाला व्यक्ति अगर हंस भी दे तो फिर उसके मुंह को खुला हुआ देखकर बच्चे डर जाते हैं। क्योंकि जो आदमी आठ-दस महीनों के बाद हंसेगा तो उसके चेहरे का आकार डरावना हो ही जाएगा।

तनाव के निवारण

तनाव से बचने के लिए सबसे पहले मन में ज्यादा इच्छाएं न पालें, मान-सम्मान की चाह को त्यागें, प्रतिदिन सुबह-शाम ईश्वर का ध्यान, संध्या-उपासना नियम से करें, संसार के ज्यादा घालमेल में न पड़ें, समयानुसार अपने कर्त्तव्यों को पूरा करें, दीर्घसूत्री न बनें, आज का काम कल पर न टाले, पानी ज्यादा पीयें, प्रकृति के बीच कुछ समय बिताएं, बच्चों के साथ बैठें, हंसने और मुस्कराने की आदत को न छोड़े, किसी भी प्रकार की कोई परेशानी या समस्या सामने हो तो उस पर सही चिंतन करें। एक कागज पर भी लिख सकते हैं कि समस्या का कारण क्या है? और उसका समाधान कैसे होगा, किन-किन लोगों का सहयोग इसमें सहायक होगा और उसके अनुसार प्रयास करें। लेकिन पिसे हुए को न पीसे। प्राणायाम करें, व्यायाम करें, सैर करें और वर्तमान में जीने की आदत डालें। ईश्वर पर विश्वास रखें और स्वयं पर भी भरोसा रखें। अपने आपसे भी प्रेम करें और दूसरों में भी अच्छाईयां खोजें। बुरी आदतों को छोड़ें और अच्छी आदतों से नाता जोड़ें। प्रतिदिन अपने मन को शांत करें और सुझाव दें कि संपूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाला परमपिता परमात्मा मेरा सबसे सगा साथी है। माता-पिता, बंधु और भ्राता है। उससे बड़ी कोई शक्ति संसार में नहीं है। वही मेरे कर्मों के अनुसार फल-प्रदाता भी है। जो भी सुख-दु:ख और समस्याएं मेरे सामने हैं वे मेरी अपनी हैं। अपने मन को समझाएं कि संसार का अर्थ ही संघर्ष और साहस है। मुझे साहस से काम लेना है। नित-निरंतर मन, कर्म, वचन से पवित्र रहना है और अपने तपोबल से सफलता प्राप्त करनी है। इस तरह की सोच मन को शक्ति देती है और व्यक्ति तनाव से उभारने लगता है।

- क्रमश:

तीन दिवसीय वृक्षारोपण उत्सव सम्पन्न

वृक्षों से मिलती है परोपकार की प्रेरणा - प्राचार्या अनीता गौतम

प्रकृति मां की तरह मनुष्य की रक्षा करती है और उसे सम्पोषण प्रदान करती है। आधुनिक परिवेश में लगातार कटते हुए वृक्ष और समाप्त होती जा रही हरियाली एक चिंता का विषय है। वृक्ष लगाना एक पुण्य का कार्य है और वृक्षों की रक्षा करना मनुष्य का धर्म है। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-14, फरीदाबाद हरियाणा के द्वारा 17 से 19 जुलाई 2019 के बीच श्रावण मास की रिमझिम वर्षा की फुहारों में स्कूल के बच्चों ने छायादार एवं फल तथा फूलों के 100 से ज्यादा पौधे लगाए। इस अवसर पर कुछ आयुर्वेदिक औषधियों के पौधों का भी रोपण किया गया। बच्चों ने इन पौधों की देखभाल करने का भी संकल्प लिया। इस कार्यक्रम की प्रेरणा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-14, फरीदाबाद की प्राचार्या श्रीमती अनीता गौतम, मुख्याध्यापिका श्रीमती तनुजा आनंद ने बच्चों को इस रचनात्मक कार्य के लिए आशीर्वाद और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वृक्षारोपण करते रहिए और वृक्षों से शिक्षा भी लेते रहिए। वृक्षों से हमें परोपकार की प्रेरणा मिलती है और परोपकार करना ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। - ***प्रबन्धक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

एकरूपीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों का शुभारम्भ

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा किया गया एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य के सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन साक्षी रहे। यज्ञ का यह अनुपम दृश्य आर्य समाज के इतिहास में एक महान कीर्तिमान है। इस क्रम में भविष्य में भी ऐसे वृहद यज्ञ के आयोजन हेतु दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण देने के लिए विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के अधिकारीगण योजना बनाए और सामूहिक रूप से विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण की कक्षाओं का आयोजन करें। इसके लिए सभा की ओर से प्रशिक्षक की भी व्यवस्था की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **सतीश चड्डा, महामंत्री, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, मो. 9313013123**

समस्त आर्य समाज एवं आर्य संस्थाएं श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में

वेद प्रचार सप्ताहों का करें विधिवत आयोजन

वैदिक धर्म के अनुसार मनाया जाने वाला प्रत्येक पर्व शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास की प्रेरणा प्रदान करता है। जीवन की यात्रा में चलते-चलते किसी-न-किसी कारण से मानव जीवन में उदासी, निराशा और चिंता आदि का प्रवेश स्वाभाविक है। इसीलिए हमरे यहां समय-समय पर पर्व मनाने की परंपरा अति प्राचीन है। क्योंकि पर्व में अंतर्निहित प्रेरणा मनुष्य को नई शक्ति, नया उत्साह और नया विचार देकर उसे आगे बढ़ने, ऊंचा उठने के लिए प्रेरित करती है। श्रावणी पर्व का अवसर हमारे सामने है। इस पर्व में वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का विशेष महत्व माना गया है। अपने वैदिक ज्ञान-विज्ञान को पढ़ने, सुनने, सोचने, समझने और उस पर गहराई से चिंतन- मनन कर अपनाने में ही मनुष्य मात्र का कल्याण है।

संसार में व्यक्ति केवल उम्र से बड़ा नहीं होता, बल्कि ज्ञान से बड़ा बनता है। जितना हम जानते जाते हैं उतने ही बड़े होते जाते हैं और ज्ञान के आधार पर ही मानव जीवन में आने वाली समस्याएं- अड़चनें स्वयं छोटी होती जाती हैं। इसलिए जीवन विकास की यात्रा पर आगे बढ़ने के लिए गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी श्रावणी पर्व, अर्थात् वेद-प्रचार सप्ताहों का सभी महानुभाव अधिकारी अपनी- अपनी आर्य समाजों में विधिवत आयोजन करें।

श्रावणी पर्व पर नियमित स्वाध्याय का करें - संकल्प

वैदिक धर्म में प्रत्येक वर्ण और आश्रमों के मनुष्यों के लिए वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय अनिवार्य माना गया है। ब्राह्मण वर्ण और ब्रह्मचर्य आश्रम की तो नींव ही स्वाध्याय पर टिकी है अर्थात् विद्यार्थियों को और ब्राह्मण, पुरोहित- आचार्यों को विशेष रूप से स्वाध्याय शील होना ही चाहिए। क्षत्रिय वर्ग अर्थात् सैन्य बल तथा सेना के उच्च अधिकारी लोग स्वाध्याय शील होंगे तो सुरक्षा और अनुशासन की व्यवस्था उचित होगी। इसी तरह व्यापारी वर्ग को भी स्वाध्याय का विशेष लाभ यह होता है कि उनमें सात्विकता का समावेश रहेगा। शुद्रों को भी अपने उत्थान के लिए स्वाध्याय करना ही चाहिए।

अधिकांशतया एक उम्र तक कुछ विशेष जानने की और सीखने की जिज्ञासा मनुष्य के भीतर दिखाई देती है, उसके बाद मनुष्य को आलस्य घेर लेता है और व्यक्ति पढ़ना-पढ़ाना बंद कर देता है। अगर कोई उसे स्वाध्याय के लिए प्रेरित भी करे तो वह यही कहता है कि अब पढ़कर क्या करना? क्या करेंगे पढ़-लिखकर बहुत पढ़ लिया, बस अब और नहीं। लेकिन श्रावणी पर्व प्रेरित करता है कि जीवन में नवीनता बनाए रखने के लिए निरन्तर स्वाध्याय अति आवश्यक है। जब तक आप सीखते रहते हैं तब तक आपके जीवन में नयापन बना रहता है। समुद्र के किनारे पर जो रेत का अंबार होता है उसमें से एक कण के बराबर भी मनुष्य पूरे जीवन में नहीं जान पाता और हमारी ज्ञान संपदा कितनी है, जितना कि समुद्र के किनारे रेत का भंडार। इसलिए श्रावणी पर्व पर संकल्प करें कि हम प्रतिदिन नियमपूर्वक आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करेंगे। नित निरंतर कुछ-न-कुछ नया और उपयोगी ज्ञान ध ारण कर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते रहेंगे।

स्वाध्याय की महिमा

शरीर की उन्नति, प्रगति का आधार जैसे अन्न को माना गया है, वैसे ही मन की विशलता और महानता आधार स्वाध्याय है। प्राचीन काल में तो स्वाभाविक रूप से ही लोग वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय प्रतिदिन करते थे, किंतु वर्षा ऋतु में वेदपाठ, धर्मोपदेश और ज्ञान चर्चाओं का विशेष आयोजन किया जाता था। श्रावणी पर्व पर या नियमित वेद पढ़ने का मतलब है कि आप ईश्वरीय आज्ञाओं को जान रहे है और वेदों पर आधारित ऋषि मुनियों के द्वारा निर्मित ग्रंथों के पढ़ने का सीधा अर्थ है कि आप युग युगांतरों के ऋषियों के अनुभूत विचारों को आत्मसात कर रहे हैं। इसलिए आर्य समाजों में यज्ञोपरांत वैदिक प्रार्थना का गान किया जाता है-

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें,
बल पायें चढ़ें, नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहे, ऋजुपंथ गहें,
परिवार कहे, वसुधा भर को।।
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें निज जीवन को।
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें भूमंडल को।।

श्रावणी पर्व के आयोजन

बंधुओं, वर्ष 2019 में 73वें स्वाधीनता दिवस पर ही रक्षाबंधन के पर्व का संयोग है। इसके उपरांत 24 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व है।

इन दोनों पर्वों के बीच की अवधि को श्रावणी पर्व अर्थात् वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाएं।

वेद प्रचार समारोह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ नहीं होता। यदि वेद प्रचार समारोह को उत्साहपूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनाया जाए तो ज्ञान गंगा घर-घर में पहुंचाई जा सकती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित प्रमुख लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् विश्व को श्रेष्ठ बनाना ही वेद प्रचार समारोह का भी प्रयोजन होना चाहिए।

वेद प्रचार समारोह को सफल बनाने हेतु अपनी सुविधा अनुसार निम्न उपायों में से अधिकाधिक उपाय किए जा सकते हैं-

1. बृहद यज्ञों का आयोजन (यदि सम्भव हो तो पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर) करें जिसमें आर्य सदस्यों आदि के अतिरिक्त, जन सामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए। सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

2. यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन-सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

3. अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार-विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन अथवा कार्यशालाएं आयोजित करें। ***'सुखी परिवार कैसे रहें?'*** विषय पर यदि गोष्ठियां आयोजित की जाएं तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

4. वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथाओं का भी आयोजन करें जिससे इन ग्रन्थों के विचारों का लाभ लोगों के धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनीतिक उत्थान के लिए मिल सकें।

5. क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। **इस हेतु सभा से 'एक निमन्त्रण', आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र' एवं 'लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश' उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।**

6. आर्यसमाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके 'आत्मावलोकन' अवश्य करें कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधियां सन्तोषजनक हैं? क्या उससे और अधिक कुछ सुधार किया जा सकता है? यदि नहीं, तो उसके कारण और समाधानों पर चर्चा करें।

7. उपरोक्त के अतिरिक्त कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क में उठे तो उसे हमें भी लिखकर भेजें जिससे अन्य आर्य समाजों के सदस्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

8. आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद प्रचार समारोह की तिथियां निश्चित करलें और संगीतकारों, भजनोपदेशकों तथा वैदिक साहित्य का अधिकाधिक वितरण करें।

9. आर्यसमाज के अधिकारियों से यह भी प्रार्थना की जाती है कि आगामी **14 अगस्त** को **हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस विजय दिवस** के रूप में धूमधाम से मनाएं। श्रावणी उपाकर्म, एवं सामूहिक यज्ञोपवीत परिवर्तन का विशेष रूप से आयोजन करें।

अपने आयोजनों की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ '**आर्य सन्देश**' में अवश्य भेजें।

- धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

रक्तदानी आर्य वीर श्री सत्यप्रकाश जी द्वारा मानव सेवा का कीर्तिमान

"आर्य वीर दल "आर्य समाज का ऐसा युवा संगठन है कि जहां देश की युवा शक्ति को सुदिशा प्रदान की जाती है। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के व्यायाम शिक्षक सत्यप्रकाश आर्य जी महर्षि दयानंद और आर्य समाज के सिद्धांत और मान्यताओं के अनुरूप 1984 से लगातार रक्तदान करते आ रहे हैं। उन्होंने अब तक 104 बार रक्तदान किया है। जो कि अपने आपमें एक बड़ी बात है। इसके साथ-साथ इन्होंने अपने मराणोपरान्त काशी हिंदू विश्व विद्यालय को देह दान का संकल्प पत्र समर्पित किया है। सत्यप्रकाश जी के अनुसार उन्होंने अपने 50 मित्रों को नेत्र दान के लिए प्रेरित कर संकल्प कराया है। सत्यप्रकाश जी आर्य समाज के एक प्रेरक, होनहार युवा शक्ति के रूप में मानवसेवा के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ते रहे हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें उत्तम स्वस्थ एवं दीर्घ आयु प्राप्त हो। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सत्य प्रकाश जी को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।**

लॉयन्स कल्ब आकांक्षा का महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट आर्यसमाज बाहरी रिंगरोड विकासपुरी में सम्पन्न

रविवार 14 जुलाई, 2 019 'लॉयन्स कल्ब आकांक्षा' डिस्ट्रिक्ट 321 ए का महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट आर्यसमाज बाहरी रिंगरोड, विकासपुरी,नई दिल्ली-110018 में सम्पन्न हुआ। लॉयन्स सपना जी की प्रेरणा से निर्धन कन्या ईशा के एक वर्षीय कंप्यूटर प्रशिक्षण डिप्लोमा कोर्स की लगभग 29,000 रुपये राशि की व्यवस्था श्रीमती मीना व श्री एम.पी.मलिक के माध्यम से की गई। कार्यक्रम में लॉयन्स क्लब 'आकांक्षा' की प्रेजिडेंट श्रीमती सुषमा गुप्ता, श्रीमती सपना जी, श्रीमती मिथलेश जी एवं श्रीमती सिम्बा जी ने मलिक दम्पत्ति को शॉल ओढ़ाकर एवं ओ३म् प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में समाज के अंतिम छोर पर खड़े निम्न वर्ग व्यक्ति तक भोजन पहुंचाने की योजना के तहत लंगर वितरण प्रारम्भ किया गया। लंगर व्यवस्था लाइनस सपना जी के अथक प्रयासों एवं प्रेरणा से सम्पन्न हुई

Swami Dayanand, Aryasamaj and his contribution in Dalit upliftment

Continue from last issue

- Dr. Vivek Arya

In 1924 a great conference was organized in Delhi which was attended by thousands of people. Ten proposals in connection with social reforms were passed by this conference. At the end, a big feast was organized in which the leading public men of the city participated and partook the food cooked by Bhangis, Chamars and Jatavas. Dalitoddhar Sabha instigated the untouchables to draw water from wells; where this was not possible new wells were constructed.

In 1923 in Bulandsahar Pundit Sohan Lal Gaur got depressed classes to join Ramlila Procession. The sweepers offered arti to Lord Ram with singing of bhajans.

On 4th Jan 1924 in Palwal a great panchayat was organized in which depressed classes pledged not to touch meat and wine and also not to eat food cooked by Muslims.

In 1924 in Raysina Valmiki Aryasamaj Chaudhary Jai mal Singh Gujar, a rais of dist. Saharanpur permitted the Jatavas to draw water from his three wells even in the teeth of the opposition of the others.

In 1926 in fifth Dalitoddhar conference presided by Motilal Nehru, pundit Nehru said "none else, before Aryasamaj, had taught of making an attempt to eradicate this inequality."

Mahashaya Ramchandra was great social worker among untouchables in Jammu region. His work was not appreciated among high caste Hindus. They attacked him with sticks and beat him to death on 20th Jan 1920. His death changed the mind of all high caste Hindus. They adopted the mission left by him and started upliftment work in his memory among dalits. Several Pathshala were opened in Jammu, Butcher and Udhampur for educating dalits.

In 1922 at famous freedom fighter Bhai Parmanand residence in Lahore Jat Pat Todak Mandal was established with Bhai Parmanand, Swami Bhuamanand and Pundit Sant Ram as its prominent members. The aim was to promote intercaste marriages among different castes so that the conflict of castes could be eradicated. The Mandal was able to perform thousands of intercaste marriages.

In 1941 census Sardeshik Arya Pratinidhi Sabha the apex body of Aryasamaj urged to fill column of caste as Arya (Vedic dharmi) to discard casteism.

His highness maharaja of Baroda Sayaji Rao Gaekwad 111 was deeply impressed by Dalit upliftment work of Aryasamaj. He was personally impressed by Swami Nityanand of Aryasamaj and did constitutional amendment to give equal rights for all dalits as higher caste in his reign. He also opened schools and hostels for free education of dalits. His reformation drive was criticized by upper caste Hindus. The biggest problem was that no upper caste Hindu was ready to teach Dalit students in those schools. The Muslims and Christians teachers were more interested in conversion of poor dalits in way of education. Maharaja of Baroda discussed this problem with Swami Nityanand ji. Nityanand ji send master Atma ram Amritsari from Amritsar for Dalit upliftment work. Master Atma Ram was appointed as warden of Dalit hostel and Inspector to all schools for dalits. Despite being upper caste Hindu master Atma Ram faced social boycotts by high caste Hindus being Inspector to Dalit schools. He was constantly denied accommodation in high caste communities. At last he made his office in a building which was considered as ghost house from decades. With his missionary reformation work he succeeded despite many difficulties. The high caste students in different schools insulted him by verbal abuse for his missionary work but he ignored all of them. Well known writer Saint Nihal Singh was so much impressed from master Atma Ram work that he got some articles printed in British newspapers praising Atma Ram's work.

Pundit Atma Ram get students who had passed primary classes to admit for higher classes in cities and few of his students became even engineers. Once maharaja Baroda sends Mr. Shinde his officer for reposts of Dalit schools and hostels. Mr. Shinde reported that all the food was being cooked by Dalit girls and Dalit boys were seen chanting Vedic mantras. The person whom you had appointed as Inspector is true Dalit sympathizer in every sense. Master Ji success can be easily understood by the fact that number of schools he opened was 400 in number with over 20000 dalits as students including both boys and girls. Pundit ji family also continued his work his daughter Smt. Sushila kumar was president of first Bhangi parishad of Baroda.

Master Atma Ram ji is considered as forefather of Dalit upliftment work in Gujarat.

Kohla pur Naresh Chatrapati Rajshri Sahu ji Maharaj adopted similar measures in his state after inspiring from views of swami Dayanand. Sahu maharaj is credited with doing much to further the lot of the lower castes, and indeed this assessment is warranted. He did much to make education and employment available to all: he not only subsidized education in his state, eventually providing free education to all, but also opened several hostels in Kolhapur for students hailing from many different non-Brahmin communities, thereby facilitating the education of the rural and low-caste indigent. He also ensured suitable employment for students thus educated, thereby creating one of the earliest affirmative action programs in history. Many of these measures were affected in the year 1902.

Shahu's other initiatives included restricting child marriage in his state and the encouragement of intercaste marriage and widow remarriage. He long patronized the satya shodhak samaj but later moved towards the Aryasamaj. Under the influence of these social-reform movements, Sahu arranged for several non-Brahmin youths to be trained to function as priests, in defiance of timeless convention which reserved the priesthood for those of the Brahmin caste. However, he faced opposition from many, including Lokamanya Bal Gangadhar Tilak , the very famous patriot of that time.

In 1911 a thread giving ceremony was performed among Vashisht, a Dalit community in khairpur, nathamshah in Sind. The upper caste Hindus out casted many Aryasamaj members and they branded one vashistha with symbol of sacred thread with hot iron. Aryasamaj condemned this animal act on national level in its newspapers.

The education work of Arya samaj also got large success in whole country. In Bombay presidency in 1912 there were 27 educational institutions working in Dalit societies with 1231 students enrolled.

To Be Continued....

23वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 23वें परिचय सम्मेलन का आयोजन 1 सितम्बर, 2019 को आर्यसमाज आदर्श नगर, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्डा जी के अनुसार सभी आय वर्ग एवं शैक्षिक योग्यता स्तर के युवक-युवतियों का यह परिचय सम्मेलन भव्य रूप से आयोजित किया जा रहा है। महर्षि देव दयानंद की शिक्षाओं को सर्वोपरि मानते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा समय-समय पर ऐसे परिचय सम्मेलनों का आयोजन लंबे समय से करती आ रही है। महर्षि दयानंद जी के अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार आर्य युवक-युवतियां विवाह करें। इस परंपरा, सिद्धांत और मान्यता को आगे बढ़ाते हुए आर्य परिवारों की युवा पीढ़ी की सेवा में यह अदभुत प्रेरणाप्रद कार्य है। इससे पूर्व 22 आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। जिनमें दिल्ली, इंद्रौर, आणंद, रोजड़, गुजरात, जम्मु-कशमीर आदि स्थानों में आयोजित सम्मेलनों में आर्य परिवारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन को सफल बनाया। समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फॉर्म पृष्ठ 7 पर पृथक से प्रकाशित किया गया है। इस पंजीकरण फार्म को **www. thearya samaj.org** से डाउनलोड भी किया जा सकता है। और फोटोप्रति भी मान्य है। **www. matrimony.thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन पंजीकरण भी कर सकते हैं।

- अर्जुनदेव चड्ढा
राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

शोक समाचार

महाशय कुंवर सुखपाल आर्य का निधन

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय कुंवर सुखपाल जी आर्य का दिनांक 5 अगस्त, 2019 को लगभग 90 वर्ष की आयु में मुजफ्फर नगर में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

महाशय कुंवर सुखपाल जी आर्यजगत के सुविख्यात भजनोपदेशक पृथ्वी सिंह बेधड़क, पं शोभाराम प्रेमी, श्री बेगराज, पं. ताराचन्द वैदिक तोप आदि के समय से आर्यसमाज का प्रचार प्रसार करते रहे। वे आर्य भजनोपदेशक परिषद् के अध्यक्ष भी रहे तथा आर्यजगत के बड़े मंचों पर सम्मानित भी हुए।

श्री अश्विनी मग्गो जी का निधन

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी की संरक्षक माता चंचल मग्गो के सुपुत्र एवं आर्यसमाज के अन्तरंग सदस्य श्री अश्विनी मग्गो जी का 3 अगस्त, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 अगस्त, 2019 को आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

तीन दिवसीय श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार का आयोजन

आर्य समाज बिड़ला लाईंस कमला नगर नई दिल्ली द्वारा 16 से 18 अगस्त 2019, तीन दिवसीय श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में प्रतिदिन यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। 17 अगस्त को दोपहर 2:30 बजे से तीज महोत्सव का आयोजन भी विशेष रूप से किया जाएगा। जिसमें यज्ञ, भजन और प्रवचन के क्रम लगातार चलेंगे। कार्यक्रम का समापन 18 अगस्त को होगा। जिसमें सभी आर्य परिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमंत्रित है। – ***नरेन्द्र सिंघल, मन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा/ आर्यसमाज दिल्ली से सम्बन्धित नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

12 दिवसीय वृष्टी यज्ञ एवं आर्य समाज का 20वां वार्षिक उत्सव संपन्न

आर्य समाज मंदिर महर्षि पाणिनि नगर जोधपुर राजस्थान द्वारा 21 जुलाई से 1 अगस्त, 2019 तक वृहद वृष्टी यज्ञ एवं 20वें वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री भवदेव शास्त्री अजमेर, सेवाराम आर्य तथा शिवराम आर्य आदि विद्वानों का सानिध्य रहा। प्रतिदिन यज्ञ, भजन, प्रवचनों का कार्यक्रम बहुत ही प्रेरणाप्रद था।

– ***नरेन्द्र आर्य, मन्त्री***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज नजफगढ़
दिल्ली –110043

प्रधान : श्री आर्य जगदीश मलिक
मंत्री : श्री बी.डी.लांबा आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री आर्य विजय शर्मा

स्त्री आर्यसमाज बिरला लाईंस कमला नगर, दिल्ली- 110007

प्रधाना : श्रीमती वीना आर्या
मंत्राणी : श्रीमती आशा गर्ग
कोषाध्यक्ष : श्रीमती अर्चना आर्य

आर्यसमाज यमुना विहार दिल्ली- 110053

प्रधान : श्री रामस्वरूप शास्त्री
मंत्री : श्री मुकेश पंवार
कोषाध्यक्ष : श्री देवेन्द्र कमार गुप्ता

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

23 वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली – 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/..... .....व्यक्तिगत मासिक आय.....

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:.....
   दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई – अविवाहित.....विवाहित.....। बहिन– अविवाहित.....विवाहित.....।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक).....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. **विशेष:**

मैं.....घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकरी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : .....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़ आदर्श नगर, दिल्ली – 110033

दिनांक : 1 सितम्बर 2019, रविवार **समय :– प्रातः 10.00 बजे से**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428
आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़, आदर्श नगर, दिल्ली-110033
श्री रविन्द्र बत्रा, प्रधान, मो. 07011496219, श्री प्रविण बत्रा, मंत्री, मो. 09868993911, श्री देवेन्द्र जावा, कोषाध्यक्ष, मो. 09212114202

नोट : 1. ई–मेल एडरेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है
2. विक्लांग युवक–युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी इंसन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नही होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते है। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
   यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा IFSC-UTIB 0000223 में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15– हनुमान रोड़, नई दिल्ली–1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 10 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें– महर्षि दयानन्द सरस्वती

मनुस्मृति परिचर्चा

"मनुस्मृति" के बारे में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने के लिए "पण्डित लेखराम वैदिक मिशन" और "महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास" द्वारा "मनुस्मृति परिचर्चा" का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्य वक्ता: डॉ. सुरेन्द्र कुमार
सानिध्य: प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु
दिनांक : 15 सितम्बर 2019
समय:- प्रात: 9 बजे से शाम 5 बजे तक
स्थान:- महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, मोहनपुरा पुलिया के आगे, ओल्ड कैंपस, जोधपुर (राज.)

परिचर्चा में प्रवेश केवल पंजीकृत व्यक्तियों को ही मिलेगा। अत: 11 सितम्बर से पूर्व पंजीकरण अवश्य करवा लेंवे पंजीकरण करवाने के लिए 8955906023 पर Whatsapp से REG लिखकर भेजें

– ***मन्त्री***

दो दिवसीय श्रावणी पर्व संपन्न

आर्य समाज चौक पटियाला द्वारा दो दिवसीय श्रावणी पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ गजेंद्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। यज्ञोपरान्त युवा भजनोपदेशक जसविंदर आर्य ने वेद, महर्षि दयानंद और आर्य समाज की महिमा के भक्ति भावपूर्ण मधुर भजनों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर वीरेंदर सिंगला, वेद प्रकाश तुली, कर्ण आनंद मोहन सेठी, जतिंदर शर्मा, हर्ष वधवा, प्रवीण कुमार आर्य, श्रीमती संगीता सिंगला, गुलाब सिंह, बैजनाथ, के के मौदगिल, रमेश गंडोत्रा एवं शहर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों में प्रिंसिपल विवेक तिवारी, प्रिंसिपल एस.आर.प्रभाकर, प्रिंसिपल संतोष गोयल, प्रिंसिपल निखिल रंजन, प्रधान विजय आर्य आदि महानुभाव उपस्थित रहे। – ***मन्त्री***

आर्य समाज हाथीखाना, राजकोट द्वारा वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज हाथी खाना, राजकोट गुजरात द्वारा श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में वेद प्रचार सप्ताह 4 अगस्त से 11अगस्त 2019 तक आयोजित धूमधाम से किया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं भजन, प्रवचनों का विशेष आयोजन होगा।

– ***प्रबिंद्र ठाकुर, मन्त्री***

श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

आर्य समाज मंदिर 15-हनुमान रोड़ नई दिल्ली द्वारा 15 से 24 अगस्त 2019 तक वेद प्रचार समारोह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर 15 अगस्त को यज्ञ एवं सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार,18 अगस्त को सत्याग्रह बलिदान दिवस एवं 20 से 23 अगस्त तक प्रात: 7-30 से 9-15 तक यज्ञ, भजन प्रवचन और सायं 7 से 9 बजे तक भजन एवं प्रवचनों के कार्यक्रम सुनिश्चित हैं। 24 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में स्कूलों और गुरूकुलों के छात्र-छात्राओं की "आदर्श महापुरूष योगीराज श्रीकृष्ण" विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। उपरोक्त कार्यक्रम में आचार्य श्यामदेव जी यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे तथा उनके वेद प्रवचनों के साथ-साथ श्रीमती गरिमा शास्त्री जी के मधुर भजन होंगे। कार्यक्रम के अनुसार आप सभी सादर आमंत्रित है।

– ***विजय दीक्षित, मंत्री***

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनो से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। – ***महामन्त्री***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 अगस्त, 2019 से रविवार 11 अगस्त, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 08/-09 अगस्त, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 अगस्त, 2019

प्रथम पृष्ठ का शेष

नए सूर्य का उदय कर दिखाया। अब तक वहां अलग झण्डा, अलग निशान, अलग विधान गतिशील थे। लेकिन 5 अगस्त के बाद कशमीर की धरा पर भारत की आन, बान और शान का प्रतीक एक तिरंगा झण्डा ही लहर-लहर लहराएगा और वहां पर भारत का एक ही संविधान लागू होगा। कशमीर को जो विशेष राज्य का दर्जा दिया गया था वह पूरी तरह अब समाप्त हो जाएगा। अब वहां देश के किसी भी कोने से कोई भी नागरिक आ-जा सकता है, वहां अपना घर बना सकता है, जमीन खरीद सकता है, उद्योग-व्यापार चला सकता है और कश्मीरियों से रिश्ते-नाते भी सरलता से संभव हो सकते हैं। इसीलिए आज पूरे देश में भारत की एकता और अखण्डता की प्रतिबद्धता का सम्मान करते हुए विशेष त्यौहार मनाया जा रहा है, चारों तरफ उमंग, उत्साह, उल्लास और खुशियां मनाई जा रही हैं और क्यों न मनाई जाएं? जब 70 सालों के लंबे अरसे से अटका हुआ राष्ट्र हित का कार्य सफल हो जाए, जिसके लिए देश ने अनेक महान वीरों ने बलिदान दिया है, उन अमर शहीदों का सपना साकार हो जाए तो यह अदभुत खुशी छुपाए नहीं छुपती, छलक कर बाहर आ ही जाती है। आज देश परिवर्तन की अंगडाई ले रहा है, देश सही अर्थों में बदल रहा है, हर आयु-वर्ग के नागरिकों के मन में राष्ट्र के प्रति प्रेम जाग रहा है। राष्ट्र धर्म में ही सब धर्म समाहित हो जाते हैं, राष्ट्र भक्ति ही सबसे बड़ी भक्ति हैं, अत: आओ भारत की एकता-अखंडता को नमन करें, अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रयत्न किए गएसफल प्रयास का स्वागत करें, राष्ट्र को सर्वोपरि मानें और राष्ट्र सेवा का संकल्प करें।

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न
श्री अरुण प्रकाश वर्मा पुन: प्रधान निर्वाचित

दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्यसमाज - आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का निर्वाचन 14 जुलाई, 2019 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी श्री शिवशंकर गुप्ता जी की अध्यक्षता एवं देखरेख में सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से **श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी को पुन: प्रधान** एवं **श्री विजय दीक्षित जी को पुन: मन्त्री** निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर श्री चन्द्रवीर सिंह चौहान - **उप प्रधान**, श्री संजय कुमार - **उपमन्त्री**, श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा - **आन्तरिक लेखा नीरिक्षक**, श्रीमती सुनीता बुग्गा - **पुस्तकाध्यक्ष** एवं श्री प्रभाकर को **आर्य वीर दल अधिष्ठाता** निर्वाचित किया गया। वरिष्ठ सदस्य श्री वेदव्रत शर्मा जी एवं श्री सुशील महाजन जी को आर्यसमाज का संरक्षक घोषित किया गया। **आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।**

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर
स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन
में भाग लेने हेतु
वाराणसी यात्रा

आर्यजन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की समान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में नि:शुल्क की जाएगी।

दिल्ली एव आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949)
श्री सुनेहरीलाल यादव (8383092581)
श्री सुखवीर सिंह (9350502175)
श्री सतीश चड्डा (9313013123)

आर्यसमाज के भजनों के संग्रह हेतु - आवश्यक सूचना

यह सर्वविदित है कि आर्य समाज के भजन सारगर्भित और भावपूर्ण होते हैं। इसके लिए भजनों के लेखकों और मधुर भजन गायकों को बहुत-बहुत बधाई। भजनों का आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य जगत् के सभी भाषाओं के भजनोपदेशकों और भजन लेखकों से अनुरोध है कि आप अपने मधुर भजनों की रिकार्डिंग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को ईमेल पर भेजकर वैदिक धर्म-संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसर में सहयोग प्रदान करें। दिल्ली सभा का प्रयास है कि विश्व भर में आर्य समाज के भजनोपदेशकों के भजनों को संग्रहीत कर सुरक्षित किया जाए। जिससे आर्य समाज की आने वाली पीढ़ियां भी मधुर भजनों का श्रवण करें और प्रेरणा प्राप्त करके आगे बढ़े।

कृपया अपने भजन सीडी/डी.वी.डी/पैन ड्राइव के माध्यम से '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें अथवा **9540045898 पर व्हाट्एप्प** करें।

- महामन्त्री

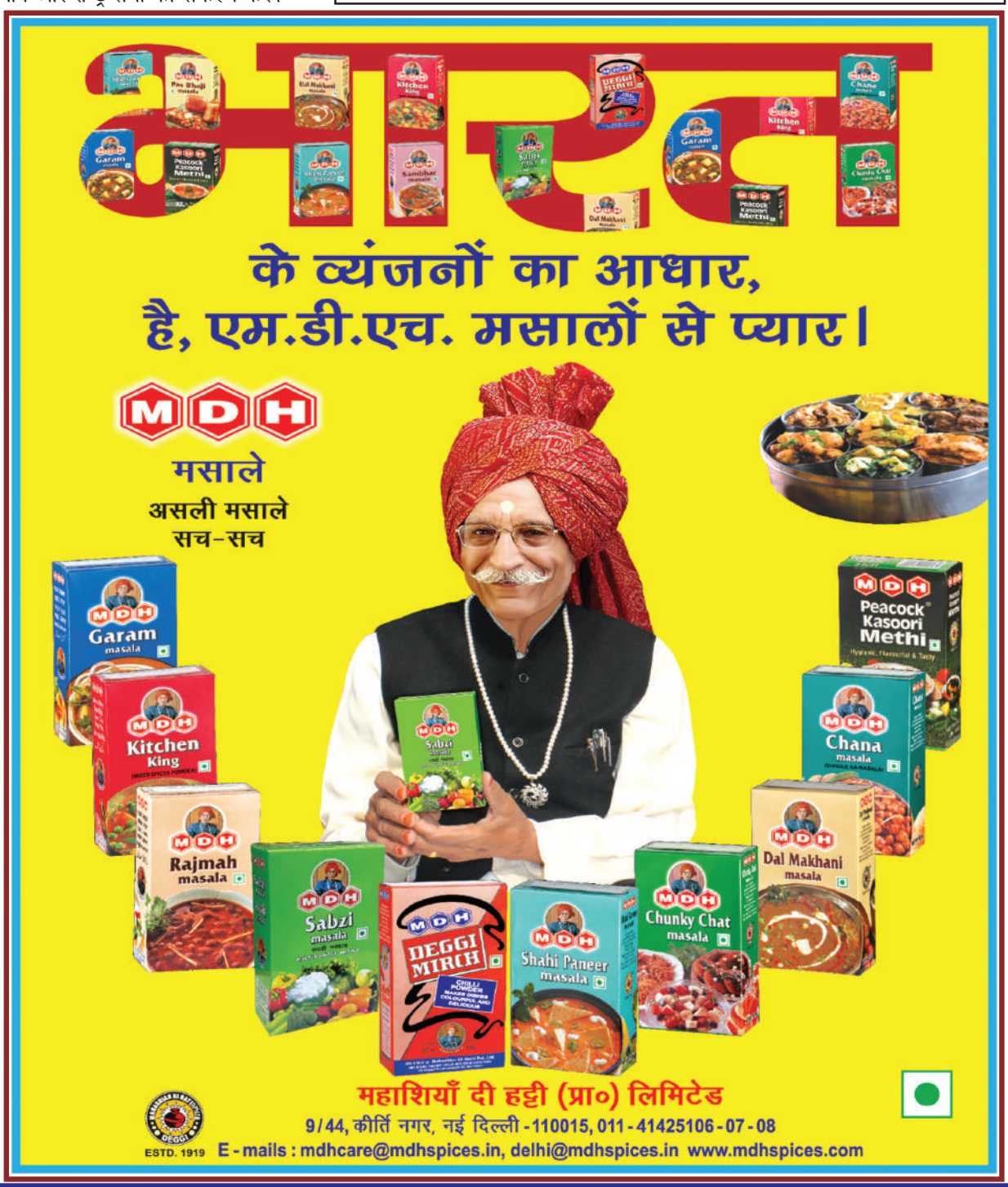

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह